खण्ड-316, अंक-5
शनिवार, 29 चैत्र, शक संवत् 1897
(19 अप्रैल, 1975 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 316 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1975

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, 19 अप्रैल, 1975

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में, अध्यक्ष, श्री वासुदेव सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—241

अजीजुर्रहमान, श्री
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार जमील उर्फ जिमी मियां, श्री (एडवोकेट)
अबुल फैज शाह, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
आगा जैदी, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ऊदल, श्री
ओम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री
ओम प्रकाश, श्री (जिला शाहजहांपुर)
कन्हैया लाल सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
काजी जलील अब्बासी, श्री
काली चरण यादव, श्री
काशी नाथ मिश्र, श्री
काशी प्रसाद, श्री
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण दत्त, श्री (उर्फ बालराज)
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
केशरी लाल, श्री
कैलाश पति, श्रीमती
क्रान्ति कुमार, श्री
खचेड़ू सिंह मोहरिया, श्री
गंगा देवी विशारद, श्रीमती
गंगा प्रसाद, श्री
गंगा स्वरूप, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गया सिंह, श्री
गायत्री देवी, श्रीमती
गिरिजा किशोर मिश्र, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोपी नाथ कामेश्वरपुरी, श्री
गोरे लाल शाक्य, श्री
गोविन्द प्रसाद गैरोला, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री
गोविन्द सिंह नेगी, श्री
चन्द्र नारायण सिंह, श्री
चन्द्र पाल सिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरण सिंह, चौधरी
चरण सिंह, डाक्टर
चेतराम गंगवार, श्री
छेदा लाल चौधरी, श्री
जंग बहादुर, श्री (अतरौलिया, जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर वर्मा, श्री (जिला बाराबंकी)
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री

जगदीश मिश्र, श्री
जगदीश अवस्थी, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जमुना प्रसाद बोस, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराज गौतम, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डा०
झाम लाल अहिरवार, श्री
झिलमिट, श्री
तीरथ राम कोहली, श्री
तेज नरायन त्रिवेदी, श्री
त्रिवेणी सहाय, श्री
दधीच सिंह, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दिनेश चन्द्र रस्तोगी, श्री
दीना नाथ सेवक, श्री
दीपनारायण बन महन्थ, श्री
दीपनारायण पाण्डेय, श्री
दुर्योधन, श्री
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
देवी सिंह, श्री
धर्म चन्द्र मिश्र, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धर्म सिंह, श्री
धीरेन्द्र सहाय, श्री
ध्रुव नारायण सिंह, श्री
नजु राम, श्री
नत्थू सिंह यादव, श्री
नन्द राम, श्री
नन्हें लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथू राम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नियाज हसन खां, श्री
निसार अहमद अन्सारी, श्री
पुरुषोत्तम दास, चौधरी
पूरन चन्द, श्री
प्यारे लाल, श्री (जिला अलीगढ़)
प्यारे लाल, श्री (जिला मेरठ)
प्रकाश नारायण गुप्ता, डाक्टर
प्रताप नारायण, श्री
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभू दयाल, श्री
प्रेम दत्त, श्री
फिरंगी प्रसाद त्रिशारद, श्री
बंशीधर, श्री
बच्चा पाठक, श्री
बनवारी राम यादव, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बल्देव, श्री
बांके लाल, श्री
बादाम सिंह, श्री
बाबूलाल वर्मा, श्री
बेचन राम, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ यादव, श्री
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण निर्मोही, श्री
भगवती प्रसाद, श्री
भगवती सिंह विशारद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भीषम, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भोला दत्त सकलानी, श्री
मंगरे सिंह, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मलखान सिंह, डाक्टर (जिला जालौन)
मलखान सिंह सैनी, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)

मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां, श्री
महावीर प्रसाद, श्री
महेन्द्र रिपुदमन सिंह, राजा
माखन लाल मिश्र, श्री
माता प्रसाद, श्री
माधव प्रसाद त्रिपाठी, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मुलतान सिंह यादव, चौधरी
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री
मुहम्मद हयात, श्री
मेघनाथ सिंह शिशोदिया, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
मोहम्मद अयूब सिद्दीकी, श्री
मोहम्मद असलम, श्री
मोहम्मद रफी खां, श्री
मोहम्मद शकील अहमद, श्री
यशपाल सिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुवीर, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला गोंडा)
रणधीर सिंह, श्री
रफी उल्ला, श्री
रमा पन्त, कुमारी
राघवेन्द्र सिंह, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राजबहादुर चन्द, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राम औतार सिंह भदौरिया, श्री
रामगरीब, कैप्टेन
रामचन्द्र बक्श सिंह, श्री
राम जनम राय, श्री
रामजी सिंह, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
राम दयाल सिंह, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव, श्री
रामदेव यादव, श्री
राम नाथ, बाबा
राम निहोर, श्री
रामपति, श्री
राम पूजन पटेल, श्री
राम प्यारे तिवारी, श्री
राम रतन सिंह, श्री
राम रति बिन्द एडवोकेट, श्री
रामरती देवी, श्रीमती
राम लखन, श्री (जिला इटावा)
राम लाल राही, श्री
रामशिरोमणि दुबे, श्री
राम समझावन, श्री
राम समुझ तिवारी, श्री
राम सुन्दर पांडेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
राम हर्ष चौधरी, श्री
रूप राम, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लालू राम, श्री
विजयपाल सिंह, श्री
विद्याधर, श्री
विमल प्रसाद तिवारी, श्री
वीर बहादुर सिंह, श्री
वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शफीकुर्रहमान बर्क, श्री
शान्ति देवी यादव, श्रीमती
शान्ति प्रपन्न शर्मा, श्री
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शिव कुमार पाण्डेय, श्री
शिव कुमारी दुबे, श्रीमती
शिव कैलाश, श्री
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर
शिवपाल सिंह, श्री
शिव प्रसाद गुप्त, श्री
शिव शंकर सिंह, श्री
शिव सम्पत्ति राम, श्री

शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्याम किशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम लाल रावत, श्री
श्यामा देवी, श्रीमती
सच्चिदानन्द बाजपेयी, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्य प्रकाश मालवीय, श्री
सन्त सिंह यूसुफ ,श्री
सलाहउद्दीन उस्मानी, श्री (उर्फ नब्बन)
सीताराम निषाद, श्री
सुक्खन सिंह, श्री
सुखदराज सिंह, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल कुरील, श्री
सुरेन्द्र प्रताप नारायन, श्री
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री
सुल्तान सिंह यादव, श्री
सूबेदार प्रसाद, श्री
सोहन लाल, श्री (जिला बदायूं)
सोहन लाल घुसिया, श्री
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
हर प्रताप सिंह, श्री
हरिराम, श्री
हरीश कुमार गंगवार, श्री
हरीश चन्द्र खन्डेलवाल, श्री
हुब राज, श्री
हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री

विधान सभा सदस्य, श्री जटाधर बाजपेयी के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मन्त्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)—

अध्यक्ष जी, आज फिर एक दुखद प्रसंग को लेकर मैं इस माननीय सदन में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। इस माननीय सदन के सदस्य, श्री जटाधर बाजपेयी, कानपुर निवासी स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर और आज तक सार्वजनिक जीवन के कानपुर की शोभा, साधारण जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले एक साधारण परिवार में जन्म लेकर अपना सर्वस्व देश की सेवा में लगा देने वाले श्री जटाधर बाजपेयी का कल सायंकाल देहावसान हो गया, जिससे हमें हार्दिक क्लेश है। मान्यवर, जटाधर का सार्वजनिक जीवन लगभग 40 वर्ष का था और इन दिनों में उन्होंने संगठन के स्तर पर, कानपुर महापालिका के मेयर के पद पर, इस विधान सभा के माननीय सदस्य के नाते अपनी विलक्षण बुद्धि और प्रतिभा देश सेवा का संकल्प जिस सादगी और सौजन्य से बराबर निर्वहन किया है वह अनुकरणीय है। मान्यवर, उनको कुछ माह पहले पीलिया रोग लगा, फिर वह कुछ अच्छे हुये और फिर सार्वजनिक जीवन में दौड़-धूप करने लगे, बीमार पड़े और इस बार बड़ी मुश्किल से मित्रों ने जोर देकर अस्पताल में भेजा। उनका ख्याल था कि अगर वह अस्पताल में चले जायेंगे तो रोजाना जो दुखी दुख कहने आयेंगे वह उसको नहीं सुन सकेंगे। बहुत दबाव मित्रों ने दिया और उन्हें कानपुर के मेडिकल कालेज में भेज दिया गया। वहां वह कुछ अच्छे हुए और उन्होंने डाक्टरों से जिद की कि उन्हें छोड़ दिया जाये और वह अपने घर आ गये। मुस्लिम सम्प्रदाय का एक बहुत बड़ा जलसा वहां पर था, तो मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों ने उन्हें बुलाया। बाजपेयी जी को अल्प संख्यकों से बड़ा प्रेम था। सबकी राय के खिलाफ वह बोलने के लिये चले गये, लौटकर आये तो तबियत खराब हुई, उसी दिन विधान सभा में बजट पेश होने वाला था, तो उन्होंने सोचा कि कम से कम आज तो जायें। मैंने सुना कि वह आये हैं तो मैंने कहा कि

आप क्यों अपने प्राण दे रहे हैं अभी आपको बहुत सतर्क रहना चाहिये और उन्हें किसी तरह वापस भेज दिया. और वे जाकर फिर बीमार पड़ गये। मेडिकल कालेज दिल्ली ले जाये गये। उनकी किडनी फंक्शन नहीं कर रही थी, उनको गुर्दे का रोग लग गया था, लेकिन आल इंडिया इन्स्टीट्यूट में भी ज्यादा लाभ नहीं हुआ। कुछ अच्छे हुए, लेकिन वे अपने घर कानपुर आ गये और फिर उन्होंने थोड़ा काम शुरू किया और फिर बीमार हो गये और फिर यकायक उन्हें अस्पताल में ले जाया गया। मैं कानपुर गया था, तारीख तो स्मरण नहीं लेकिन इस महीने के शुरू-शुरू में गया था। उनको देखने अस्पताल भी गया लेकिन वे उस समय मूर्छित अवस्था में थे। डाक्टरों को विश्वास था कि इस मर्तबा उन्हें ब्रेन हैमरेज हो गया है और अन्ततोगत्वा उनके डाक्टरों का विश्वास सही उतरा, उन्हें वे मौत से न बचा सके। मौत सबको आती है पर देश सेवा के काम को करते-करते मौत आ जाय, मरने वाले के लिये सौभाग्य की बात है। यह जरूरी है कि जो उनके मित्र हैं जिनकी वे सेवा करते थे और जिस दल को ऐसी हानि होती है और राजनीतिक जीवन में ऐसे मजबूत जो सामान्यत : राजनीतिक मजबूत होते हैं, उन सब को हानि हुई लेकिन 'बैट इन हैंड' मरने वाला सबसे अधिक प्रसन्न हो सकता है। श्री जटाधर बाजपेयी, सेवा का बैट हाथ में लिये चले गये, इस दुनियां से उनकी लीला समाप्त हो गई। मान्यवर, सारे माननीय सदस्य, मैं और मेरे दल के सभी माननीय सदस्यों की ओर से, आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना पहुंचाने की कृपा करें और मैं यह भी भगवान से प्रार्थना करता हूं कि मृत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

चूंकि कई माननीय सदस्य आज उनकी अन्त्येष्ठि में भाग लेने कानपुर जाना चाह रहे हैं, और जैसा कि माननीय संसदीय मन्त्री के साथ आपके कक्ष में भी तय हुआ है, उनकी स्मृति में सदन की आज की कार्यवाही स्थगित कर दी जाय। इन शब्दों के साथ मैं फिर श्री जटाधर बाजपेयी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

मान्यवर, माननीय नेता सदन ने जो कुछ श्री जटाधर बाजपेयी जी के निधन के सम्बन्ध में जजबात से भरे भाषण में कहा, मैं उससे पूर्णतया सहमत हूं। मैं भी उनको बहुत दिनों से जानता था। थोड़े दिन हुए जब मैं कानपुर गया था किसी सिलसिले में तो उनसे मुलाकात हुई थी वे बहुत अच्छे जनसेवक थे। उनके जाने से कानपुर ही नहीं बल्कि प्रदेश के सारे जन-जीवन को ठेस पहुंची है और उस हद तक वे एक माने में गरीब हो गये हैं। अब और न कुछ कहकर मैं सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि मेरी ओर से, विपक्ष के दलों की ओर से और भारतीय लोक दल की ओर से, आप उनके सन्तप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचाने की कृपा करें। मैं भगवान से भी प्रार्थना करता हूं कि वे उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके परिवार के लोगों को धीरज प्रदान करें।

आज की कार्यवाही को स्थगित करने के सिलसिले में जो माननीय बहुगुणा जी ने प्रस्ताव किया है, उसका भी मैं समर्थन करता हूं।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

माननीय अध्यक्ष जी, श्री जटाधर बाजपेयी जी के निधन पर जो नेता सदन और नेता विरोधी दल ने अपने विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता

[श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—]

हूं। मान्यवर, मुझे भी उन्हें देखने का अवसर मिला था। उनका बड़ा सादा जीवन था और वह एक बहुत कर्मठ समाजसेवी थे। सार्वजनिक क्षेत्रों में अनेक रूप में उन्होंने सफलतापूर्वक और निष्ठा से कार्य किया। उनके निधन से समाज को बड़ा धक्का लगा है। हम सब दुखी हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और भगवान उनके परिवार को इस महान कष्ट को सहन करने की शक्ति दे। साथ ही आपसे प्रार्थना है कि हमारी संवेदना संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। आज के कार्यक्रम के बारे में जो कुछ माननीय नेता सदन ने कहा है, मान्यवर, वह ठीक ही है।

श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी-गढ़वाल)—

मान्यवर, स्वर्गीय श्री जटाधर बाजपेयी जी के बारे में जो विचार माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और नेता जनसंघ ने व्यक्त किये हैं मैं अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। श्री बाजपेयी जी हमारे प्रदेश के अन्दर स्वतन्त्रता संग्राम के एक सेनानी रहे। उसके बाद कानपुर के मेयर रहे और यहीं हमारे साथ ही इस बेन्च ज पर बैठते थे। वह बहुत मिलनसार व्यक्ति थे। उन्होंने सार्वजनिक जीवन को एक बहुत ही ऊंचे पैमाने पर रखा। मेरा भी आपसे निवेदन है कि हमारे दल की तरफ से भी शोक सन्तप्त परिवार को संवेदना भेजने की कृपा करें।

श्री शिव प्रसाद गुप्त (जिला आगरा)—

अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य माननीय नेताओं ने जो स्वर्गीय बाजपेयी जी के प्रति उद्गार व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। बाजपेयी जी के कार्य की कुछ और अधिक प्रशंसा की जाय तो वह भी कम है। मुझे भी कुछ दिन उनके साथ रहने का अवसर मिला। वह बहुत ही साहसी कार्यकर्ता थे। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। उनके निधन से कानपुर की विशेषतौर से बहुत ज्यादा क्षति हुई है। उत्तर प्रदेश का भी बहुत नुक्सान हुआ है। हम लोगों को बहुत दुख है कि इतनी जल्दी हमारे बीच से ऐसा साहसी कार्यकर्ता उठ गया। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि ऐसा बुरा दिन हमारे सामने न लावे जो बार-बार यही कार्यक्रम हम लोगों को इस सदन में करना पड़े। अध्यक्ष जी, मेरे और मेरे दल की ओर से कृपया सन्तप्त परिवार को धैर्य का संदेश भिजवा दें। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री अध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के माननीय नेताओं ने श्री जटाधर बाजपेयी के बारे में जो शोकोद्गार प्रकट किये हैं उनसे मैं सदन को और अपने को सम्बद्ध करता हूं। कल सायं पौने 7 बजे उनका देहावसान हो गया रुग्णता के कारण और हमारे बीच से वह उठ गये।

एक सार्वजनिक कार्यकर्ता से रूप में 53 वर्ष में ही किसी का उठ जाना बड़ा ही हृदयद्रावक होता है। उनके उठ जाने से उनके परिवार को तथा हम सब को जो शोक हुआ है वह कल्पनातीत है। मैं माननीय नेता सदन और नेता, विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो भावनायें व्यक्त की हैं उनको उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दूंगा। मैं माननीय नेता सदन तथा माननीय नेता, विरोधी दल ने जो आज का कार्य स्थगित करने के

लिये सुझाव दिया है उसके अनुसार मैं आज का कार्य स्थगित कर दूंगा। अब हम दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा के लिये प्रार्थना करेंगे।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए।)

श्री अध्यक्ष—

अब हम उठते हैं, 21 तारीख को 11 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 11 बजकर 15 मिनट पर सोमवार, 21 अप्रैल, 1975 के 11 बजे दिन तक के लिये स्थगित हो गया।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, बिधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
19 अप्रैल, 1975।

अवध पत्रिका प्रयास

पी0एस0यू0पी0—एल0 128 वि0 सभा (824)—1975—845।